राजा भोज का स्वप्न

RAJA'S DREAM

By

Miss. C. M. Tucker.

Translated

By

RAJA SIVA PRASADA,

C. S. I.

For

H. C. Tucker, Esquire, B. C. S.

राजा शिवप्रसाद (सितारैहिन्द) ने बनाया ॥

—:o:—

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा

जौलाई सन् १९०५ ई०

1905.
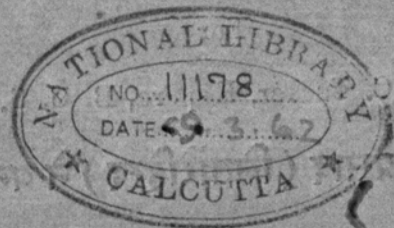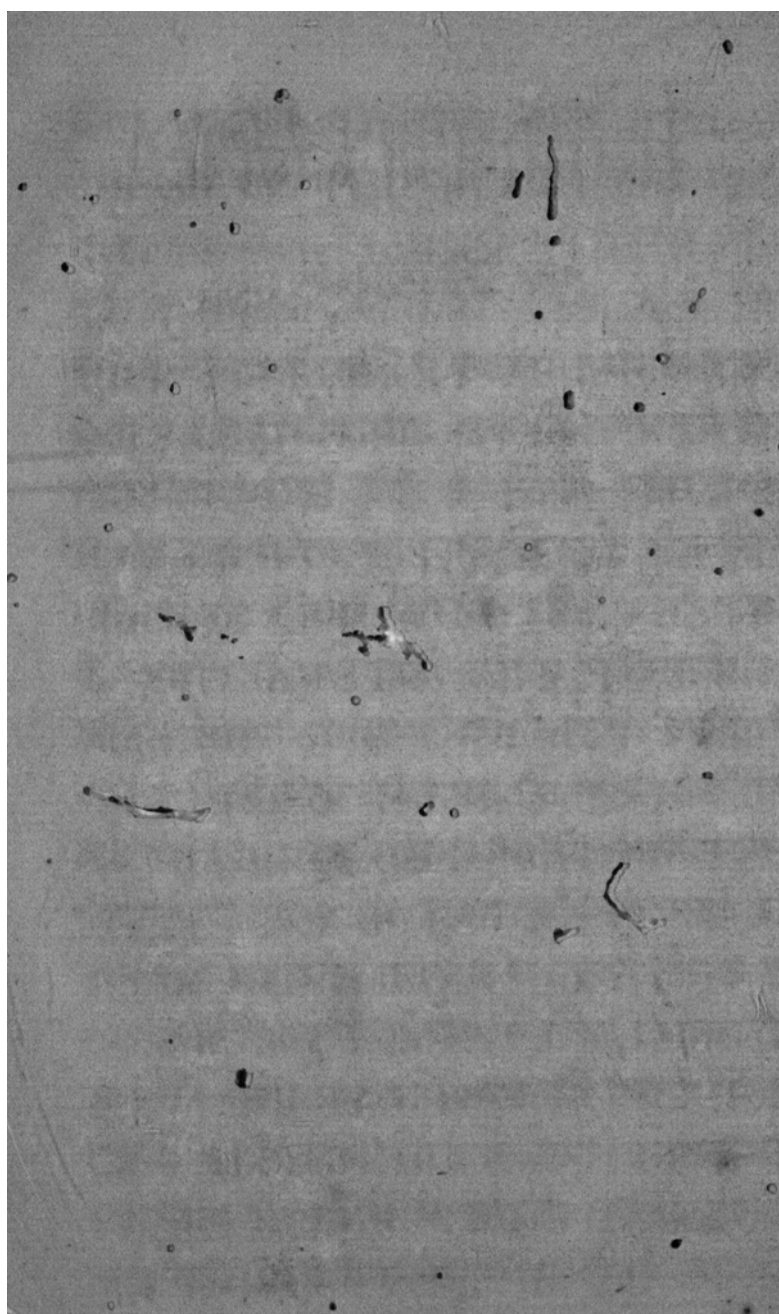
राजा भोजका स्वप्न ॥

वह कौनसा मनुष्य है जिसने महा प्रतापी राजा महाराज भोजका नाम न सुनाहो उसकी महिमा और कीर्त्ति तो सारे जगत् में व्याप रही है बड़े बड़े महिपाल उसका नाम सुनतेही काँप उठते थे और बड़े बड़े भूपति उसके पाँव में अपना शिर नवाते सैना उसकी समुद्र की तरंगों का नमूना और खज़ाना उसका सोने चांदी और रत्नों की खान से भी दूना दान में राजा करणको लोगों के जी से भुला दिया था और न्याय में विक्रम को भी शर्मा लिया था कोई उसके राज भर में भूखा न सोता और न कोई उघाड़ा रहने पाता जो सत्तू मांगने आता उसे मोतीचूर मिलता और जो गज़ी चाहता उसे मलमल दियाजाता पैसे की जगह लोगों को अशरफ़ियाँ बाँटता और मेहकी तरह फ़-क़ीरों पर मोती बरसाता एक एक श्लोक के

लिये ब्राह्मणों को लाख लाख रुपया उठा देता और एक-एक दिनमें लाख लाख गोदान दे डालता सवालक्ष ब्राह्मणों को षट्रस भोजन करा के तब आप खाने को बैठता तीर्थ यात्रा स्नान दान और व्रत उपवास में सदा तत्पर रहता बड़े बड़े चांद्रायण कियेथे और बड़े बड़े जंगल पहाड़ छान डाले थे एक दिन शरद् ऋतु में संध्याके समय सुंदर फुलवाड़ीके बीच स्वच्छ पानीके कुंडके तीर जिसमें कुमुद और कमलों के दरमियान जलपंछी कलोलें कररहे थे रत्न जटित सिंहासन पर कोमल तकिये के सहारेसे स्वस्थ चित्त बैठा हुआ महलों की सुनहरी कलशियां लगी हुई संगमरमर की गुमज्जियों के पीछे से उदय होता हुआ पूर्णिमा का चांद देख रहा था और निर्जन एकान्त होनेके कारण मनही मन में शोचता कि अहो मैंने अपने कुल को ऐसा प्रकाश किया जैसे सूर्य से इन कमलों का विकास होता है क्या मनुष्य और क्या जीव जन्तु मैंने अपना साराजन्म इन्हींके भला करने में गँवाया और व्रत उपास करते २

अपने फूल से शरीर को कांटा बना दिया जितना मैंने दान दिया उतना तो कभी किसी के ध्यान में भी न आया होगा जिन जिन तीर्थों की मैंने यात्रा की वहां कभी परंदे ने पर भी न मारा होगा मुझ से बढ़कर अब इस संसार में और कौन पुण्यात्मा है और आगे भी कौन हुआ होगा जो मैं ही कृतकार्य नहीं तो फिर और कौन होसक्ता है मुझे अपने ईश्वर पर दावा है वह मुझे अवश्य अच्छी गति देवैगा ऐसा कब होसक्ता है कि मुझे भी कुछ दोष लगेगा इसी अर्से में चोबदार पुकारा चौधरी इन्द्रदत्त निगाह रूबरू श्रीमहाराज सलामत भोजने आंख उठाई दीवानने साष्टांग दण्डवत् की फिर सम्मुख आ हाथ जोड़ यों निवेदन किया पृथ्वीनाथ वह इँदारा सड़क पर जिसके वास्ते आपने हुक्म दिया था बनकर तैयार होगया और वहां वह आमका बाग भी लग गया जो पानी पीता है आपको अशीश देताहै और जो उन पेड़ोंकी छाया में विश्राम करता है आपकी बढ़ती दौलत मनाता है राजा अति

प्रसन्न हुआ और कहा कि सुन मेरी अमल्-
दारी भर में जहां जहां सड़कहै कोस कोस पर
कूए खुदवाके सदावर्त बैठादे और दुतर्फ़ा पेड़
भी जल्द लगवादे इसी अर्से में दानाध्यक्ष ने
आकर आशीर्वाद दिया और निवेदन किया
कि धर्मावतार वह जो पाँच हज़ार ब्राह्मण
हरसाल जाड़ों में रज़ाई पाते हैं सो डेवढ़ी पर
हाज़िर हैं राजाने कहा अब पाँच के बदले
पचास हज़ार को खिलाकरे और रज़ाई की
जगह शाल दुशाला दिया जावे दानाध्यक्ष
दुशालों के लाने के वास्ते तोशेख़ाने में गया
इमारत के दारोग़ा ने आकर मुजरा किया
और ख़बर दी कि महाराज वह बड़ा मन्दिर
जिसके जल्द बना देनेके वास्ते सर्कार से हुक्म
हुआ है आज उसकी नेव खुदगई पत्थर गढ़े
जाते हैं और लुहार लोहा भी तैयार कर रहे
हैं महाराज ने तिउरियां बदल कर उस दरोग़ा
को खूब घुरका और कहा कि मूर्ख वहां प-
त्थर और लोहे का क्या काम है बिलकुल
मन्दिर संगमरमर और सङ्गमूसासे बनायाजावे

और लोहेके बदल उसमें सब जगह सोना काम में आवे जिसमें भगबान् भी उसे देखकर प्रसन्न होजावे और मेरा नाम इस संसार में अतुल कीर्त्ति पावे यह सुनकर सारा दरबार पुकार उठा कि धन्य महाराज धन्य क्यों न हो. जब ऐसे हो तब तो ऐसे हो आपने इस कलिकाल को सत्ययुग बना दिया मानो धर्म का उद्धार करने को इस जगत् में अवतार लिया आज आपसे बढ़कर और दूसरा कौन ईश्वरका प्यारा है हमने तो पहलेही से आपको साक्षात् धर्म-राज विचारा है व्यासजी ने कथा आरम्भ की कथा के पीछे देर तक भजन कीर्त्तन होता रहा इसमें चांद शिरपर चढ़आया घड़ियाली ने निवेदन किया कि महाराज रात आधी के निकट पहुँची राजाकी आँखों में नींद छारही थी व्यासजी कथा कहते थे पर राजाको ऊँघ आती थी उठकर रनवास में गया जड़ाऊ पलंग और फूलों की सेज पर सोया रानियाँ पैर दाबने लगीं राजा जी की आँख झपक गई स्वप्न में क्या देखता है कि वह बड़ा संगमरमर

का मन्दिर बनकर बिलकुल तैयार होगया जहां कहीं उसपर नक्काशी का काम किया है तो बारीकी में हाथीदाँत को भी मात कर दिया है जहाँ कहीं पच्चीकारी का हुनर दिखलाया है तो जवाहिरों को पत्थरों में जड़कर तसवीर का नमूना बनादिया है कहीं लालों के गुल्लालों पर नीलम की बुलबुलें बैठी हैं और ओसकी जगह हीरों के लोलक लटकाये हैं कहीं पुखराजों की डंडियों से पन्ने के पत्ते निकाल कर मोतियों के भुट्टे लगाए हैं सोने की चोबों पर कमख़ाब के शामियाने और उनके नीचे बिल्लौर के हौज़ों में गुलाब और केवड़े के फुहारे छूट रहे हैं मानों धूप जलरहा है सैकड़ों कपूरके दीपक बलरहे हैं राजा देखतेही मारे घमण्ड के फूल कर मशक बन गया कभी नीचे कभी ऊपर कभी दहने कभी बायें निगाह करता और मन में शोचता कि क्या अब इतने पर भी मुझे कोई स्वर्ग में घुसने से रोकेगा या पवित्र पुण्यात्मा न कहेगा मुझे अपने कर्मोंका भरोसा है दूसरे किसी से क्या काम

पड़ेगा इसी अर्सेमें वह राजा उस स्वप्नेके मन्दिरमें खड़ा २ क्या देखता है कि एक जोतसी उसके साम्हने आस्मान से उतरी चली आती है उसका प्रकाश तो हज़ारों सूर्य से भी अधिक है परन्तु जैसे सूर्य्यको बादल घेर लेता है इस प्रकार उसने अपने मुहँपर एक नक़ाब डाल लिया है नहीं तो राजाकी आंखें कब उसपर ठहर सकती थीं वरन इस नक़ाब पर भी मारे चकाचौंध के झपकी चली जाती थीं राजा उसे देखतेही काँप उठा और लड़खड़ाती सी ज़बान से बोला कि हे महाराज आप कौन हैं और मेरे पास किस प्रयोज़न से आये हैं उस दैवी पुरुषने बादल की गरजके समान गंभीर उत्तर दिया कि मैं सत्य हूं मैं अंधों की आँखें खोलताहूं मैं उनके आगे से धोखेकी टट्टी हटाता हूं मैं मृगतृष्णा के भटके हुओं का भ्रम मिटाता हूं और स्वप्ने के भूले हुओंको नींदसे जगाता हूं हे भोज यदि कुछ हिम्मत रखताहै तो आ हमारे साथ आ और हमारे तेजके प्रभाव से मनुष्यों के मन के मन्दिरों का भेद ले

इस समय हम तेरेही मनको जांच रहेहैं राजा के जीपर एक अजब दहशत सी छागई नीची निगाहें करके गरदन खुजाने लगा सत्यबोला भोज तू डरताहै तुझे अपने मनका हाल जानने में भी भय लगताहै भोजने कहा कि नहीं इस बातसे तो नहीं डरता क्योंकि जिसने अपने को नहीं जाना उसने फिर क्या जाना सिवाय इस के मैं तो आप चाहता हूं कि कोई मेरे मनकी थाह लेवे और अच्छी तरह से जाँचे मारे व्रत और उपवासों के मैंने अपना फूलसा शरीर कांटा बनादिया ब्राह्मणों को दान दक्षिणा देते २ सारा ख़ज़ाना ख़ाली करडाला कोई तीर्थ बाक़ी न रक्खा कोई नदी या तालाब नहाने से न छोड़ा ऐसा कोई आदमी नहीं है जिसकी निगाह में मैं पवित्र पुण्यात्मा न ठहरूं सत्य बोला ठीक पर भोज यह तो बतला कि तू ईश्वर की निगाह में क्या है क्या हवामें बिना धूप तृसरेणु कभी दिखलाई देते हैं पर सूर्य्य को किरन पड़तेही कैसे अनगिनत चमकने लग जाते हैं क्या कपड़े में छाने हुए पानी के

दरमियान किसी को कीड़े मालूमं पड़ते हैं पर जब उस शीशे को लगाकर देखो जिससे छोटी चीज़ बड़ी नजर आती है तो एक एकं बूंद में हजारोंही जीव सूझने लग जाते हैं पस जो तू उस बातके जानने से जिसे अवश्य जांनना चाहिये डरतानहीं तौ आ मेरे साथ आ मैं तेरी आंखें खोलूंगा निदान सत्य यह कह के राजा को मन्दिर के उस बड़े ऊँचे दरवाजे पर चढ़ा लेगया कि जहाँ से सारा बाग दिखलाई देता था और फिर वह उससे यों कहने लगा कि भोज मैं अभी तेरे पाप कर्म्मों का कुछ भी ज़िकर नहीं करता क्योंकि तूने अपने को निरा निष्पाप समझ रक्खा है पर यह तो बतला कि तूने पुण्य कर्म्म कौन कौन से किये हैं कि उनसे सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर संतुष्ट होगा तो मैं भी सब लोगोंकी तरह निस्संदेह तेरी प्रशंसा करूं राजा यह सुनके अत्यन्त प्रसन्न हुआ यह तो मानों उसके मनकी बात थी पुण्य कर्मके नाम ने उसके चित्तको कमलसा खिला दिया उसे निश्चय था कि पापतो मैंने चाहे किया हो चाहे

न किया हो पर पुण्य मैंने इतना किया है कि भारीसे भारी पापभी उसके पासंगे भी न ठहरेगा राजा को वहां उस समय स्वप्ने में तीन पेड़ बड़े ऊँचे २ अपनी आँखके साम्हने दिखलाई दिये फलोंसे इतना लदे हुये कि मारे बोझके उनकी टहनियां धरती तक झुक गई थीं राजा उन्हें देखतेही हरा होगया और बोला कि सत्य यह ईश्वर की भक्ति और जीवों की दया अर्थात् ईश्वर और मनुष्य दोनों की प्रीति के पेड़ हैं देख फलोंके बोझसे धरती पर नये जाते हैं यह तीनों मेरेही लगाये हैं पहले में तो यह सब लाल २ फल मेरे दानसे लगे हैं और दूसरे में यह पीले पीले मेरे न्यायसे और तीसरे में यह सब सफ़ेद फल मेरे तपका प्रभाव दिखलाते हैं मानों उस समय चारों ओरसे यह ध्वनि राजाके कान में चली आती थी कि धन्य हो महाराज धन्य हो आज तुमसा पुण्यात्मा दूसरा कोई नहीं तुम साक्षात् धर्म का अवतार हो इस लोक में भी तुमने बड़ा पद पाया है और उस लोक में भी तुम्हें इससे अधिक मिलेगा तुम मनुष्य और

ईश्वर दीनों की आँखों में निर्दोष और निष्पाप
हो सूर्य के मण्डल में लोग कलंक बतलाते हैं पर
तुम्हें एक छींटा भी नहीं लगाते सत्य बोला कि
भोज जब मैं इन पेड़ों के पास से आया था जिन्हें
तू ईश्वर की भक्ति और जीवों की दया के बत-
लाता है तब तो उनमें फल फूल कुछ भी नहीं
था निरे ठूंठसे खड़े थे यह लाल पीले और सफेद
फल कहां से आगये यह सच मुच उन पेड़ों में
फल लगे हैं या तुझे फुसलाने और खुश करने
को किसी ने उनकी टहनियों से लटका दिये हैं
चलो उन पेड़ों के पास चलकर देखें तो सही मेरे
समझ में तो यह लाल लाल फल जिन्हें तू अ-
पने ज्ञान के प्रभाव से लगे बतलाता है यश और
कीर्ति फैलाने की चाह अर्थात प्रशंसा पाने की
इच्छा ने इन पेड़ में लगाये हैं निदान ज्योंहीं सत्य
ने उस पेड़ के छूने को हाथ बढ़ाया राजा देखने
में क्या देखता है कि वह सारे फल जैसे आ-
समान से ओले गिरते हैं एक आन की आन में
धरती पर गिर पड़े धरती बिलकुल लाल होगई
पर पेड़ों पर सिवाय पत्तों के और कुछ न रहा।

सत्य ने कहा कि राजा जैसे कोई किसी चीज़ को मोमसे चिपकाताहै उसी तरह तू ने अपने भुलांनें को प्रशंसा पाने की इच्छा से यह फल इस पेड़ पर लगा लिये थे सत्य के तेज से वह मोम गलगया पेड़ ठूंठेका ठूंठा रह गया जो कुछ तू ने दिया और किया सर्व दुनिया के दिखलाने और मनुष्यों से प्रशंसा पाने के लिये केवल ईश्वर की भक्ति और जीवों की दया से तो कुछ नहीं दिया यदि कुछदिया हो या कियाहो तो तूही क्यों नहीं बतलाता मूर्ख इसी के भरोसे पर तू फूलाहुआ स्वर्गमें जानेको तैयार हुआ था भोज ने एक ठंढी श्वास ली उसने तो औरों को भुलाया था पर वह सब से अधिक भूलाहुआ निकला सत्य ने उस पेड़की तरफ़ हाथ बढ़ाया जो सोने की तरह चमकते पीले पीले फलों से लदाहुआ था सत्यका हाथ पास आते हीं इसका भी वही हाल होगया जो पहले का हुआ था सत्य बोला कि राजा इस पेड़ में ये फ़ल तूने अपने भुलाने को स्वार्थ सुधारनेकी इच्छासे लगा लिये थे कहने वाले ने ठीक

कहा है कि मनुष्य मनुष्य के कर्म्मों से उसके मनकी भावनाका बिचार करता है और ईश्वर मनुष्य के मन की भावना के अनुसार उसके कर्मोंका हिसाब लेताहै तू अच्छी तरह जानता है कि यही न्याय तेरे राज्य की जड़ है जो न्याय न करे तो फिर यह राज्य तेरे हाथ में क्यों कर रहसके जिस राज्य में न्याय नहीं वह तो बेनेव का घर है बुढ़िया के दाँतों की तरह हिलता रहता है अब गिरा तब गिरा मूर्खतूही क्यों नहीं बतलाता कि यह तेरा न्याय स्वार्थ सुधारने और सांसारिक सुखपानेकी इच्छा से है अथवा ईश्वर की भक्ति और जीवों की दया से भोज के माथे पर पसीना हो आया आंखें नीची कर लीं जवाब कुछ न बन पड़ा तीसरे पेड़ की पीरी आई सत्यका हाथ लगतेही उसकी भी वही हालत हुई राजा अत्यन्त लज्जित हुआ सत्य ने कहा कि मूर्ख यह तेरे तप के फल कदापि नहीं इनको तो इस पेड़ पर तेरे अहंकारने लगा रक्खाथा वह कौन सा व्रत वा तीर्थयात्रा है जो तूने निरंहंकार

केवल ईश्वर की भक्ति और जीवों की दया
से किया हो तूने यह तप इसी वास्ते किया
कि जिस में तू अपने को औरों से अच्छा
और बढ़के बिचारे ऐसेही तप पर गोबर गनेश
तू स्वर्ग मिलनेकी उम्मेद रखता है पर यहतो
बतला कि मन्दिरकी इन मुड़ेरों पर वे जानवर
से क्या दिखलाई देते हैं कैसे सुन्दर और प्यारे
मालूम होते हैं पर तो उनके पन्नेके हैं और गर-
दने फ़ीरोज की लेकिन तुममें तो सारे किस्मके
जवाहिर जड़ दिये हैं राजा के जीमें घमंड की
चिड़ियाने फिर फुर फुरीली मानों बुझते हुये
दीयेकी तरह जग जगा उठा जल्दी से जवाब
दिया कि हे सत्य यह जो कुछ तू मन्दिर की
मुँड़ेरों पर देखताहै मेरे संध्याबंदन का प्रभावहै
मैंने जो रातों जाग २ कर और माथा रगड़ते२
इस मंदिर की दिहली को घिसाकर ईश्वर
की स्तुति बन्दना और बिनती प्रार्थना की है
वही अब चिड़ियों की तरह पंख फैला कर
आकाश को जाती हैं मानों ईश्वर के सामने
पहुँचकर अब मुझे स्वर्ग का राजा बनाती हैं

सत्यने कहा कि राजा दीनबन्धु करुणासागर श्रीजगन्नाथ जगदीश्वर अपने भक्तों की बिनती सदा सुनता रहता है औ जो मनुष्य शुद्ध हृदय और निष्कपट होकर नम्रता और श्रद्धा के साथ अपने दुष्कर्म्मोंका पश्चात्ताप अथवा उनके क्षमा होनेका टुक भी निवेदन करता है यह उसका निवेदन उसी दम सूर्य चांद को बेधंकर पार होजाता है फिर क्या कारण कि यह सब अब तक मंदिर की मुड़ेरही पर बैठे रहे आचल देखें तो सही हम लोगों के पास जाने पर आकाशको उड़जातेहैं यां उसी जगह पर गिरकट कबूतरों की तरह फड़ फड़ाया करते हैं भोज डरा लेकिन सत्य का साथ न छोड़ा जब मुड़ेर पर पहुँचा तो क्या देखता है कि वह सारे जानवर जो दूरसे ऐसे सुंदर दिखलाई देते थे मरेहुये पड़ेहैं पंख नुचे खुचे और बहुतेरे बिल्कुल सड़हुये यहां तक कि मारे बदबू के राजा का शिर भिन्ना उठा दो एकने जिन में कुछ दम बाक़ी था जो उड़ने का इरादा भी किया तो उनका पंख पारेकी तरह भारी हो-

गया और उन्हें उसी ठौर दबा रक्खा तड़फा ज़रूर किये पर उड़ने ज़रा भी न दिया सत्य बोला भोज बस यही तेरे पुण्य कर्म्म हैं इन्हीं स्तुति बंदना और बिनती प्रार्थना के भरोसे पर तू स्वर्ग में जाया चाहता है सूरत तो इनकी बहुत अच्छी है पर जान बिल्कुल नहीं तूने जो कुछ किया केवल लोगों के दिखलाने को जीसे कुछ भी नहीं जो तू एक बार भी जीं से पुकारा होता कि दीनबन्धु दीनानाथ दीनहितकारी मुझ पापी महा अपराधी डूबते हुये को बचा और कृपादृष्टि कर कर तो वह तेरी पुकार तीरकी तरह तारों से पार पहुँची होती राजा ने शिर नीचा कर लिया उत्तर कुछ न बन आया सत्यने कहा कि भोज अब आ फिर इस मंदिर के अंदर चलें और वहां तेरे मनके मन्दिर को जांचें यद्यपि मनुष्य के मनके मंदिर में ऐसे ऐसें अँधेरे तहख़ाने और तलघरे पड़े हुये हैं कि उनको सिवाय सर्वदर्शी घट घट अंतर्यामी सकल जगत् स्वामी के और कोई भी नहीं देख अथवा जांच सक्ता तौ भी तेरा

परिश्रम व्यर्थ न जावेगा राजा उस सत्य के पीछे खिंचा खिंचा फिर मन्दिर के अन्दर घुसा पर अब तो उसका हालही कुछ से कुछ होगया सच मुच स्वप्ने का खेलसा दिखलाई दिया चाँदी की सारी चमक जाती रही सोने की बिल्कुल दमक उड़गई दोनों में लोहे की तरह मोर्चा लगा हुआ और जहाँ जहाँ से मुलम्मा उड़गया था भीतर का चूना और ईंट कैसा बुरा दिखलाई देता था जवाहिरों की जगह केवल काले काले दाग़ रह गयेथे और संगमर्मर की चट्टानों में हाथ हाथ भर गहरे गढ़े पड़गयेथे ॥ राजा यह देखकर भैचक सा रह गया औसान जाते रहे हक्का बक्का बन गया धीमी आवाज़ से पूछा कि यह टिड्डी दल की तरह इतने दाग़ इस मन्दिर में कहाँ से आये जिधर मैं निगाह उठाताहूं सिवाय काले काले दाग़ों के और कुछ भी नहीं दिखलाई देता ऐसा तो छीपी छीट को भी नहीं छापेगा और न शीतला से बिगड़ा हुआ किसी का मुखड़ा देख पड़ेगा ॥

सत्य बोला कि राजा ये दाग़ जो तुझे इस मन्दिर में दिखलाई देते हैं वे दुर्बचन हैं जो दिनरात में सैकड़ों बार तेरे मुख से निकले याद तो कर तूने क्रोध में आकर कैसी कड़ी कड़ी बातें लोगों को सुनाई हैं क्या खेल में और क्या अपना अथवा दूसरे का चित्त प्रसन्न करने को क्या रुपया बचाने अथवा अधिक लाभ पाने को और क्या दूसरे का देश अपने हाथ में लाने अथवा किसी बराबर वाले से अपना मतलब निकालने और दुश्मनोंको नीचा दिखानेके लिये कितने झूठ बोला है अपने ऐब छिपाने और दूसरे की आंखों में अच्छा मालूम होने अथवा झूठी तारीफ़ पाने के वास्ते कैसी कैसी शेख़ियाँ हाँकी हैं और किस किस तरह की लनतरानियाँ मारी हैं अपने को औरों से अच्छा और औरोंको अपने से बुरा दिखलाने को कहांतक बातें बनाई हैं तुझे तो अब कुछ भी याद न रहा बिल्कुल एकबारगी भुलादिया पर वहाँ वह तेरे मुँह से निकलतेही बही में दर्ज होगया तू इन दाग़ों के गिनने में असमर्थ

है पर उस घट घट निवासी अनन्त अविनासी को एक एक बात जो तेरे मुहँ से निकली है याद है और याद रहेगी उसके निकट भूत और भविष्य दोनों बर्त्तमान सा है ॥ भोजने शिर न उठाया पर उसी दबी ज़बान से इतना मुहँसे और निकाला कि दाग़ तो दाग़ पर ये हाथ २ भरके गढ़े क्यों कर पड़ गये और सोने चांदी में मोर्चा लगकर ये मसाले कहां से दिखलाई देने लगे ॥ सत्यने कहा कि राजा क्या तूने कभी किसी को कोई लगती हुई बात नहीं कही अथवा बोली ठोली नहीं मारी अरे नादान यह बोली ठोली तो गोली से अधिक काम कर जाती हैं तूतो इन गढ़ोंही को देख कर रोताहै पर तेरे ताने तिसने तो बहुतों की छातियोंसे पार होगये जब अहंकारका मोर्चा लगा तो फिर यह दिखलावे का मुलम्मा कब तक ठहर सक्ताहै स्वार्थ और अश्रद्धा का ईंट चूना प्रकट हो आया राजा को इस अर्से में चिमगादड़ोंने बहुत तंग कर रखा था मारेबूके सिर फटा जाता था भनगे और फतंगों से

सारा मकान भरगया था बीच बीच में पंखवाले सांप और बिच्छू भी दिखलाई देते थे राजा घबराकर चिल्लाउठा कि यह मैं किस आफ़त में पड़ा इन कम्बख्तों को यहां किसने आने दिया सत्य बोला राजा सिवाय तेरे इनको यहाँ और कौन आने देवेगा तूही तो इन सबको लायाहै यह सब तेरे मनकी बुरी बासना है तूने समझा था कि जैसे समुद्र में लहरें उठा और मिटा करती हैं उसीतरह मनुष्यके मनमें भी संकल्पकी मौजें उठकर मिट जाती हैं पर रे मूढ़ याद रख कि आदमी के चित्त में ऐसा सोच बिचार कोई नहीं आता जो जगत्कर्त्ता प्राणदाता परमेश्वर के सामने प्रत्यक्ष नहीं होजाता यह चिमगादड़ और भनगे और सांप बिच्छू और कीड़े मकोड़े जो तुझे दिखलाई देतेहैं वे सब काम क्रोध मोह लोभ मत्सर अभिमान मद ईर्षा के संकल्प बिकल्प हैं जो दिन रात तेरे अन्तःकरण में उठाकिये और इन्हीं चिमगादड़ और भनगे और सांप बिच्छू और कीड़े मकोड़ों की तरह तेरे हृदय के आकाश

में उड़ते रहे क्या कभी तेरे जी में किसी राजा की ओरसे कुछ द्वेष नहीं रहा या उसके मुल्क-माल पर लोभ नहीं आया या अपनी बड़ाई का अभिमान नहीं हुआ या दूसरे की सुन्दर स्त्री देखकर उस पर दिल न चला राजा ने एक बड़ी लम्बी ठंढी साँस ली और अत्यन्त निराश होके यह बात कही कि इस संसार में ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जो कहसके कि मेरो हृदय शुद्ध और मनमें कुछ भी पाप नहीं इस संसार में निष्पाप रहना बड़ा कठिन है जो पुण्य करना चाहतेहैं उस में भी पाप निकल आता है इस संसार में पाप से रहित कोई भी नहीं ईश्वर के सामने पवित्र पुण्यात्मा कोई भी नहीं सएा मन्दिर बरन सारा धरती और आकाश गूंजउठा कोई भी नहीं कोई भी नहीं॥ सत्यने जो आँख उठाकर उस मन्दिर की एक दीवार की तरफ़ देखा तो वह उसी दम संग-मरमर से आइना बनगई राजा से कहा कि अब टुक इस आइने का भी तमाशा देख और जो कर्त्तव्य कर्म्मों के न

लगे हैं उनकी भी हिसाबले ॥ राजा उस आ-इने में क्या देखता है कि जिस प्रकार बरसात की बढ़ी हुई किसी नदी में जल के प्रवाह बहे जाते हैं उस प्रकार अनगिनत सूरतें एक ओर से निकलती और दूसरी ओर अलोपहोतीचली जातीहैं कभी तो राजाको वे सब भूखे औरनंगे इस आईने में दिखलाई देते जिन्हें राजा खाने पहिन्ने को देसक्ताथा पर न देकर दानका रुपया उन्हीं हट्टे कट्टे मोटे मुष्टण्ड खाते पीते हुओं को देता रहा जो उसकी खुशामद करते थे या किसी की सिफ़ारिश ले आते थे या उस के कार्दारों को घूस देकर मिला लेते थे या सवारी के समय माँगते माँगते और शोर गुल मचाते मचाते उसे तंग करडालते थे या दर्बार में आकर उसे लज्जा के भँवर में गिरादेतेथे या झूठा छापा तिलक लगाकर उसे मक्र के जाल में फँसा लेते थे या जन्मपत्र में भले बुरे ग्रह बतला कर कुछ धमकी भी दिखलाते थे या सुन्दर कबित्त और श्लोक पढ़कर उसके चित्तको भुलाते थे कभी वे दीन दुखी दिख-

लाई देते जिन पर राजा के कारदार जुल्म किया करते थे और उसने कुछ भी उसकी तहक़ीक़ात और उपाय न की न कभी उनबी-मारों को देखता जिनका चंगा करादेना राजाके इख़्तियार में था कभी वे व्यथा के जले और बिपत्ति के मारे दिखलाई देते जिनका जी राजाके दो बात कह देने से ठंढा और सन्तुष्ट हो सक्ता था कभी अपने लड़का लड़कियों को देखता जिन्हें वह पढ़ा लिखा कर अच्छी अच्छी बातें सिखलाकर बड़े बड़े पापों से बचा सक्ता था कभी उन गाँव और इलाक़ा को देखता जिनमें कूए तालाब खुदवाने और क़िसानों को मदद देने और उन्हें खेती बारी की नई नई तर्कीबें बतलाने से हज़ारों ग़रीबों का भला कर सक्ता था कभी उन टूटे हुये पुल और रास्तों को देखता जिन्हें दुरुस्त करने से वह लाखों मुसाफ़िरों को आराम पहुँचा सक्ता था राजा से ज़ियादः देखा न जासका थोड़ीही देर में घबरा कर हाथों से अपनी आँखों को ढाँप लिया वह अपने घमण्ड में

उन सब कामोंको तो सदा याद रखताथा और उनका चरचा किया करता जिन्हें वह अपनी समझ में पुण्य के निमित्त किये हुये समझा हुआथा पर उन कर्त्तव्य कामोंका कभी टुकभी सोच न किया जिन्हें अपनी उन्मत्तता में अचेत होकर छोड़ दियाथा सत्य बोला राजा अभी से क्यों घबरा गया आ इधर आ इस दूसरे आ-ईने में मैं तुझे अब उन पापों को दिखलाता हूं जो तूने अपनी उमर में किये हैं राजाने हाथ जोड़े और पुकारा कि बस महाराज बस की-जिये जो कुछ देखा उसी में मैं तो मिट्टी हो गया कुछ भी बाक़ी न रहा अब आगे क्षमा कीजिये पर यह तो बतलाइये कि आपने यहां आकर मेरे शर्बत में क्यों ज़हर घोला और पकी पकाई खीरमें साँपका बिष उगला और आपने मेरे आनन्द को इसी मन्दिर में आके नाश में मिलाया जिसे मैंने सर्वशक्तिमान् भगवान् के अर्पण किया है चाहे जैसा वह बुरा और अशुद्ध क्यों न हो पर मैंने तो उसीके निमित्त बनाया है सत्य ने कहा ठीक पर यह

तो बतला कि भगवान् इस मन्दिर में बैठा है यदि तूने भगवान्को इस मन्दिर में बिठाया होता तो फिर वहअशुद्ध क्यों रहता जरा आंख उठाकर उस मूर्त्ति को तो देख जिसे तू जन्म भर पूजता रहा है राजाने जो आँख उठाई तो क्या देखतां है कि वहां उसबड़ी ऊँची बेदी पर उसीकी मूर्त्ति पत्थर की गढ़ीहुई रक्खीहै और अभिमान की पगड़ी बाँधे हुये सत्यने कहा किमूर्ख तूने जो काम किये केवल अपनी प्रतिष्ठा के लिये इसी प्रतिष्ठा प्राप्त होने की सदा तेरी भावना और इच्छा रही और इसी प्रतिष्ठा के लिये तूने अपनी आप पूजा की रे मूर्ख सकल जगत् स्वामी घट घट अन्तर्यामी क्या ऐसे मनरूपी मन्दिरों में भी अपना सिंहासन बिछनेदेताहै जो अभिमान और प्रतिष्ठा प्राप्तिकी इच्छा इत्यादि से भराहै ये तो उसकी बिजली पड़ने के योग्य है सत्यका इतना कहनाथा कि सारी पृथ्वी एकबारगी कांपउठी मानो उसी दम टुकड़ा टुकड़ा हुआ चाहतीथी आकाश में ऐसा शब्द हुआ कि जानो प्रलय

कालका मेघ गरजा दीवार मन्दिर की चारों ओर से अड़ अड़ाकर गिरपड़ी गोया उसपापी राजा को दबाही लेना चाहती थी और उस अहङ्कार की मूर्त्तिपर ऐसी एक बिजली गिरी कि वह धरती पर औंधे मुहँ आपड़ी त्राहि मां त्राहि मां मैं डूबा मैंडूबा कंहके भोज जो चिल्लाया आँख उसकी खुल गई और सुपना सुपना होगया॥ इस अर्से में सबेरा होगया था आस्मान के किनारों पर लाली दौड़ आई थी चिड़ियाँ चह चहा रही थीं एक ओर से शीतल मन्द सुगन्ध पवन चलीआती थी दूसरे ओंर से बीन और मृदङ्ग की ध्वनि बन्दीजन राजा का यश गाने लगे हरकारे हर तरफ़ काम को दौड़े कमल खिले कमोद कुम्हलाये राजा पलंगसे उठा पर जी भारी माथा थामे हुये न हवा अच्छी लगती थी न गाने बजाने की कुछ सुध बुध थी उठतेही पहले यह हुक्म दिया कि इस नगरमें जो अच्छे से अच्छे पण्डित हों जल्द उनको मेरे पास लाओ मैंने एक सुपना देखा है कि जिसके

आगे अब यह सारा खटराग सुपना मालूम होता उस सुपने के स्मरणही से मेरे रोंगटे खड़े हुये जातेहैं. राजाके मुखसे हुक्म निकलने की देर थी चोबदारोंने तीन पण्डितों को जो उस समय वसिष्ठ याज्ञवल्क्य और वृहस्पति के समान प्रख्यात थे बात की बात में राजा के साम्हने ला खड़ा किया ॥ राजा का मुँह पीला पड़ गया था माथे पर पसीना हो आया था पूछा कि वह कौनसी उपाय है जिससे यह पापी मनुष्य ईश्वर के कोप से छुटकारा पावे उनमेंसे एक बड़े बूढ़े पंडितने आशीर्बाद देकर निवेदन किया कि धर्म्मराज धर्म्मावतार यह भय तो आपके शत्रुओंको होना चाहिये आप से पवित्र पुण्यात्मा के जीमें ऐसा सन्देह क्यों उत्पन्न हुआ आप अपने पुण्य के प्रभाव का जामा पहन के बे खटके परमेश्वर के साम्हने जाइये न तो वह कहीं से फटा कटा है और न किसी जगह से मैला कुचैला हुआ है ॥ राजा क्रोध करके बोला कि बस अधिक अपनी वाणी को परिश्रम न दीजिये और इसी दम

अपने घरकी राह लीजिये क्या आप फिर उस पर्दे को डाला चाहतेहैं जो सत्यने मेरे साम्हने से हटाया और बुद्धिकी आँखों को बंद किया चाहते हैं जिन्हें सत्य ने खोला उस पवित्र परमात्मा के साम्हने अन्याय कभी नहीं ठहर सक्ता मेरे पुण्य का जामा उसके आगे निरा चीथड़ा है यदि वह मेरे कामों पर निगाह करेगा तो नाश हो जाऊँगा मेरा कहीं पता भी न लगेगा इसमें दूसरा पंडित बोल उठा कि महाराज परब्रह्म परमात्मा तो आनन्द स्वरूप है उसकी दया के सागर का कब किसी ने किनारा पाया है वह क्या हमारे इन छोटे छोटे कामों पर निगाहें किया करता है एक कृपा दृष्टि से सारा बेड़ा पार लगा देताहै राजाने आँखें दिखला के कहा कि महाराज आप भी अपने घर को सिधारिये आपने ईश्वर को ऐसा अन्याई ठहरा दिया कि वह किसी पापी को सजाही नहीं देता सब धान बाईसपसेरी तोलता है मानो हर भोंग पुरका राज करता है इसी संसार में क्यों नहीं देख लेते जो आम

गाता है वह आम खाता है और जो बबूर लगा-
ताहै वह कांटे चुनता है तो क्या उस लोकमें
जो जैसा करेगा सर्बदर्शी घटघट अन्तर्यामी से
उसका बदला वैसाही न पावेगा सारी सृष्टि
पुकारे कहती है और हमारा अन्तः करण
भी इस बात पर गवाही देता है कि ईश्वर अ-
न्याय कभी नहीं करेगा जो जैसा करेगा
वैसाही उस्से उस्का बदला पावेगा तबतीसरा
पण्डित आगे बढ़ा और यों जबान खोली कि
महाराजाधिराज परमेश्वर के यहांसे हमलोगों
को वैसाही बदला मिलेगा कि जैसा हमलोग
काम करते हैं इस्में कुछभी सन्देह नहीं आप
बहुत यथार्थ फर्माते हैं परमेश्वर अन्याय कभी
नहीं करेगा पर यह इतने प्रायश्चित्त और
होम और यज्ञ और जप तप तीर्थ यात्रा किस-
लिये बनाये गये हैं यह इसीलिये हैं कि जिसमें
परमेश्वर हम लोगों का अपराध क्षमा करें
और बैकुंठ में अपने पास रहने को ठौर देवे
राजा ने कहा देवता जी कलतक तो मैं आप
की सब बात मानसक्ताथा लेकिन अबतो मुझे

इन कामों में भी ऐसा कोई नहीं दिखलाईदेता जिसके करने से यह पापी मनुष्य पवित्र पुण्यात्मा हो जावे वह कौनसा जप तप तीर्थयात्रा होम यज्ञ और प्रायश्चित्त है जिसके करने से हृदय शुद्ध हो और अभिमान न आजावे आदमी का फुसला लेना तो सहजहै पर उस घट घट के अन्तर्यामी को कोई क्यों कर फुसलावे जब मनुष्य का मनही पापसे भराहुआ है तो फिर उससे पुण्य कर्म कोई कहां बनआवे पहले आप उस स्वप्नको सुनिये जो मैंने रातको देखा है तब फिर पीछे वह उपाय बतलाइये जिस्से पापीमनुष्य ईश्वर के कोपसे छुटकारा पाताहै ॥

निदान राजाने जो कुछ रात को स्वप्न में देखा था सब जौंकाजौं उस पण्डित को कह सुनाया पण्डित जी तो सुनतेही अवाक होगये शिरझुका लिया राजाने निरास होकर चाहा कि तुषानल करके जल मरे पर एक परदेशी सा आदमी जो उन पण्डितोंके साथ बिना बुलाये घुस आया था सोचता विचारता उठकर खड़ा हुआ और धीरे से यों निवेदन किया